प्रकाशनार्थ

पटना. जून 20. एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीच्यूट (आद्री) द्वारा आयोजित इनोवेशन कार्यशाला के समापन दिवस की शुरुआत इसकी सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए की। यह कार्यक्रम आद्री के संस्थापक डॉ. शैबल गुप्ता और डॉ. प्रभात पी घोष के याद में की गयी है|

इस अवसर पर बोलते हुए आद्री की वरिष्ठ शोधकर्ता और महामारी वैज्ञानिक डॉ. संचिता महापात्रा ने कहा कि आद्री ने बिहार में रोग निगरानी पहलों को तकनीकी सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) रिपोर्टिंग के मामले में बिहार भारत में शीर्ष पांच सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्यों में से एक बना हुआ है। इसे नई दिल्ली में स्थित केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से सराहना मिली है। सीएचपी-आद्री के टीम लीडर डॉ. सूरज शंकर ने आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना पर एक व्यापक प्रस्तुति दी और बताया कि कैसे आद्री बिहार सरकार के बीएसएसएस के साथ मिलकर इस स्वास्थ्य योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए विभिन्न ज्ञान उत्पादों का विकास कर रहा है और अध्ययन कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि किस तरह यह योजना भारत को यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज प्राप्त करने में मदद कर रही है। सीएचपी-आद्री के ही डॉ. सत्येंद्र कुमार ने योजना के निष्पादकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। इसके बाद आद्री की एबी-पीएमजेएवाई टीम के विभिन्न अधिकारियों ने एंटी-फ्रॉड डैशबोर्ड, टीएमएस 2.0 प्रशिक्षण, स्वास्थ्य लाभ पैकेज, इस योजना के वित्त प्रबंधन आदि जैसे विषयों पर अपने योगदान और विचारों के बारे में बात की। आद्री के डॉ. दीपक कुमार ने योजना के क्रियान्वयन में आने वाली विभिन्न नीतिगत कमियों और चुनौतियों की ओर ध्यान दिलाया। ऐसी ही एक चुनौती योजना को लागू करने के लिए कर्मचारियों की कमी है । बीएसएसएस के धोखाधड़ी निरोधक विभाग की गुरिंदर रंधावा ने कहा कि अगर इस योजना के तहत इलाज के दौरान किसी लाभार्थी को जानबूझकर अपनी जेब से पैसे अस्पताल को देने पड़े हैं, तो बिहार राज्य स्वास्थ्य समिति का यह काम है कि वह उसे ये पैसे लौटाए।

आद्री की डॉ. अश्मिता गुप्ता, डॉ. मियोला फर्नांडीस और डॉ. नेहा हुई ने यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग के साथ हुई आकांक्षाओं और कौशल अंतराल के मापन पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारतीय व्यवसाय और आकांक्षाएं प्रतिष्ठा, आय, नौकरी की अवधि, शक्ति और स्वायत्तता जैसे कारकों से प्रेरित होती हैं। इसलिए बेहतर नीति-निर्माण के लिए नौकरियों के विभिन्न कार्य उपायों का अध्ययन करना और बेरोजगारी और नौकरी की आकांक्षाओं के बीच अंतर को पाटने के लिए बेहतर योजनाएं विकसित करना महत्वपूर्ण है।

इस अवसर पर सुभादीप धर और इशात तपादर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में वर्चुअल और व्यक्तिगत रूप से व्यापक रूप से भाग लिया गया।

(अभिषेक प्रसाद)